Date ___/___/____ Page No.: ______

प्रारम्भिक वर्षों में राष्ट्रीय काँग्रेस की नीतियाँ

अपनी स्थापना के समय से ही काँग्रेस द्वारा राष्ट्रवाद को सृजित करने, राष्ट्रीय आन्दोलन को संगठित करने तथा राजनीतिक चेतना उत्पन्न करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया गया। परन्तु प्रारम्भिक काँग्रेस कोई ~~महत्त्वपूर्ण~~ क्रान्तिकारी संगठन नहीं था। इसके नेता सरकार के प्रति कोई विद्रोह की भावना नहीं रखते थे। वे न केवल संवैधानिक उपायों में विश्वास करते थे वरन् वे सरकार के प्रति पूर्णतया निष्ठावान भी थे। वे अंग्रेजी शासन, सभ्यता व संस्कृति के प्रशंसक थे। प्रारम्भिक वर्षों में काँग्रेस की नीतियों को सुविधा की दृष्टि से निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत स्पष्ट किया जा सकता है।

1. ब्रिटिश शासन के प्रति निष्ठा -
2. अंग्रेजों की न्यायप्रियता में विश्वास -
3. क्रमिक ~~बि~~ सुधारों में विश्वास -
4. ब्रिटेन के साथ सम्बन्ध -

कांग्रेस के विभाजन का इतिहास -

काँग्रेस अपने जन्म से ही राष्ट्रीय आन्दोलन का पर्याय बन गयी जिसके कारण काँग्रेस का इतिहास ही भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास बन गया।

कांग्रेस का उदारवादी युग - 1885 से 1905 तक

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रारम्भिक युग उदारवादी युग के नाम से जाना जाता है। इसका समय काँग्रेस की स्थापना सन् 1885 से 1905 तक माना जाता है। इस काल में राष्ट्रीय आन्दोलन का संचालन उन नेताओं के हाथों में रहा जो अपने विचार तथा कार्यों से उदारवादी थे। इन नेताओं ने अनुनय-विनय का रास्ता अपनाना ही उचित समझा क्योंकि इस युग में काँग्रेस पर ऐसे लोगों का नियन्त्रण था जिनकी शिक्षा-दीक्षा पर पश्चिम की उदार शिक्षा का प्रभाव था।

Date __/__/____ Page No.: ____

वे अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली, न्यायिक व्यवस्था और राजनीतिक संस्थाओं में पूरी निष्ठा रखते थे। इसलिए वे भारतीय समाज को पश्चिमी समाज के ढाँचे पर गठित करना चाहते थे और पश्चिम की संस्थाओं का अनुकरण करना चाहते थे।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के उदारवादी युग में कॉंग्रेस की बागडोर दादा भाई नौरोजी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी महादेव गोविन्द रानाडे, फिरोजशाह मेहता, पंडित मदन मोहन मालवीय, वोमेश चन्द्र बनर्जी तथा गोपाल कृष्ण गोखले आदि नेताओं के हाथ में रही। इन नेताओं ने उदारवादी काल में नरम नीति का अनुसरण किया। उनकी भाषा अत्यधिक विनम्र और संयत होती थी। इसलिए उग्रवादियों ने इसे भिक्षावृत्ति की संज्ञा दी।

उदारवादी युग में कॉंग्रेस का लक्ष्य:-

उदारवादी नेता यद्यपि सुधार में विश्वास करते थे। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोग की नीति अपनायी जाये। अतः ~~उनकी~~ उनका अन्तिम लक्ष्य वैधानिक सुधारों के माध्यम से स्वशासन की प्राप्ति थी। वे ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत स्वशासन की स्थापना करना चाहते थे। श्री सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन में ही स्वशासन की बात कही थी। और सन् 1906 के कांग्रेस अधिवेशन में दादा भाई नौरोजी की अध्यक्षता में कॉंग्रेस द्वारा स्वशासन के इस लक्ष्य को स्पष्ट रूप से अपनाया गया।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, वाराणसी

Chitra "No religion has mandated killing others as a requirement for its sustenance or promotion." –Dr.A.P.J.Abdul Kalam